सामाजिक अनुसंधान के चरण

1. प्रस्तावना

सामाजिक अनुसंधान समाज में घटित होने वाली घटनाओं, प्रक्रियाओं, संबंधों, संस्थाओं तथा व्यवहारों का **वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित अध्ययन** है। सामाजिक जीवन अत्यंत जटिल होता है। मनुष्य का व्यवहार अनेक सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों से प्रभावित होता है। इसलिए सामाजिक समस्याओं और घटनाओं को केवल सामान्य अनुभव या व्यक्तिगत धारणा के आधार पर समझना पर्याप्त नहीं है।

सामाजिक अनुसंधान में शोधकर्ता एक निश्चित वैज्ञानिक प्रक्रिया का अनुसरण करता है। समस्या के चयन से लेकर निष्कर्ष निकालने और शोध-प्रतिवेदन तैयार करने तक अनेक चरण होते हैं।

सरल शब्दों में—

सामाजिक अनुसंधान के चरण वे क्रमबद्ध प्रक्रियाएँ हैं जिनके माध्यम से शोधकर्ता किसी सामाजिक समस्या का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करता है और विश्वसनीय निष्कर्ष तक पहुँचता है।

2. सामाजिक अनुसंधान के प्रमुख चरण

सामाजिक अनुसंधान के प्रमुख चरणों को निम्न प्रकार समझा जा सकता है—

समस्या का चयन → साहित्य समीक्षा → समस्या का निर्माण → उद्देश्य निर्धारण → परिकल्पना → अनुसंधान अभिकल्प → अवधारणाओं एवं चरों का निर्धारण → प्रतिचयन → आँकड़ा-संग्रह → आँकड़ों का वर्गीकरण एवं सारणीकरण → विश्लेषण एवं निर्वचन → निष्कर्ष → शोध-प्रतिवेदन

अब इन सभी चरणों को विस्तार से समझते हैं।

3. अनुसंधान समस्या का चयन

सामाजिक अनुसंधान का पहला और अत्यंत महत्वपूर्ण चरण **अनुसंधान समस्या का चयन** है।

शोधकर्ता सबसे पहले यह निर्धारित करता है कि वह **किस सामाजिक घटना या समस्या का अध्ययन करना चाहता है।**

उदाहरण के लिए—

- ग्रामीण युवाओं में बेरोजगारी

- महिलाओं का राजनीतिक सहभागिता
- विद्यार्थियों में सामाजिक माध्यमों का प्रभाव
- ग्रामीण से नगरीय प्रवासन
- जाति एवं सामाजिक गतिशीलता
- जनजातीय समुदायों में शिक्षा
- वृद्धावस्था एवं पारिवारिक संबंध

अनुसंधान समस्या के स्रोत

अनुसंधान समस्या निम्न स्रोतों से प्राप्त हो सकती है—

1. सामाजिक जीवन का प्रत्यक्ष अवलोकन
2. पूर्व प्रकाशित शोध
3. सामाजिक समस्याएँ
4. समाचार एवं समकालीन घटनाएँ
5. सरकारी रिपोर्ट
6. सिद्धांत
7. व्यक्तिगत अनुभव
8. पूर्व अनुसंधानों में पाई गई कमियाँ

अच्छी अनुसंधान समस्या की विशेषताएँ

एक अच्छी अनुसंधान समस्या—

- स्पष्ट होनी चाहिए।
- सीमित एवं विशिष्ट होनी चाहिए।
- शोध योग्य होनी चाहिए।
- सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होनी चाहिए।

- उपलब्ध समय एवं संसाधनों के भीतर अध्ययन योग्य होनी चाहिए।

4. साहित्य समीक्षा

समस्या का चयन करने के बाद शोधकर्ता उस विषय पर पहले से उपलब्ध साहित्य का अध्ययन करता है। इसे **साहित्य समीक्षा** कहा जाता है।

शोधकर्ता यह जानने का प्रयास करता है कि—

- इस विषय पर पहले क्या शोध हो चुका है?
- किन विद्वानों ने अध्ययन किया है?
- कौन-से सिद्धांत प्रयोग किए गए हैं?
- कौन-सी शोध पद्धतियाँ अपनाई गई हैं?
- पूर्व शोध के प्रमुख निष्कर्ष क्या हैं?
- अभी किन क्षेत्रों में शोध की आवश्यकता है?

साहित्य के प्रमुख स्रोत

- शोध-पत्र
- शोध-प्रबंध
- पुस्तकें
- सरकारी रिपोर्ट
- जनगणना रिपोर्ट
- पत्रिकाएँ
- सांख्यिकीय रिपोर्ट
- विश्वसनीय इलेक्ट्रॉनिक स्रोत

साहित्य समीक्षा का महत्त्व

साहित्य समीक्षा से शोधकर्ता को **अनुसंधान की पुनरावृत्ति से बचने**, शोध-अंतराल पहचानने तथा अपने अध्ययन की दिशा निर्धारित करने में सहायता मिलती है।

5. अनुसंधान समस्या का निर्माण

केवल विषय चुन लेना पर्याप्त नहीं है। चुने गए व्यापक विषय को **विशिष्ट अनुसंधान समस्या** में परिवर्तित करना आवश्यक है।

उदाहरण—

व्यापक विषय:
"ग्रामीण बेरोजगारी"

इसे अधिक विशिष्ट बनाया जा सकता है—

"भोजपुर जिले के ग्रामीण युवाओं में बेरोजगारी के सामाजिक एवं आर्थिक प्रभावों का अध्ययन।"

इस प्रकार समस्या को स्पष्ट, सीमित और शोध योग्य बनाया जाता है।

6. अनुसंधान के उद्देश्य का निर्धारण

इसके बाद शोधकर्ता यह निर्धारित करता है कि वह अपने अध्ययन के माध्यम से **क्या जानना चाहता है।**

उद्देश्यों को स्पष्ट एवं मापनीय होना चाहिए।

उदाहरण के लिए, यदि विषय है—

"ग्रामीण युवाओं में बेरोजगारी"

तो उद्देश्य हो सकते हैं—

1. ग्रामीण युवाओं में बेरोजगारी की स्थिति का अध्ययन करना।
2. बेरोजगारी के प्रमुख कारणों की पहचान करना।
3. बेरोजगारी के सामाजिक प्रभावों का अध्ययन करना।
4. बेरोजगारी और प्रवासन के संबंध का अध्ययन करना।

उद्देश्य क्यों आवश्यक हैं?

अनुसंधान के उद्देश्य पूरे अध्ययन को **दिशा प्रदान करते हैं**। इससे शोधकर्ता यह निर्धारित कर पाता है कि कौन-सी जानकारी एकत्र करनी है और उसका विश्लेषण किस दिशा में करना है।